हिन्दी पाठ-७

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा-७

सर्वशिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
प्राधिकरण, भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ-७

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा-७

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष
डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र
डॉ. स्नेहलता दास (प्रभारी)
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. सौदामिनी मिश्र
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र
डॉ. नलिनी पाढ़ी
श्रीमती प्रगति दास
श्री आशिष कुमार राय

संयोजिका:

डॉ. प्रीतिलता जेना
डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

प्रकाशक:

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

संस्करण: २०११
२०१७

मुद्रण :

पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

प्रस्तुति:

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें :

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भित्रता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थीयों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ-स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थीयों द्वारा उस कार्य को करायें। लेखनशैली बता दें, फिर लिखवाएं। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक करवाएँ । लघु निबंध, छोटे - छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्ततरां में प्रचलिन पत्रों आदि पर अभ्यास कराया जाए।

दुसरी बात है-भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुाशीलनियँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक आपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थीयों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें। इससे बच्चों की रुची परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण - पल्लवन होता है।

तीसरी बात है - मूल्यांकन - शैली में परिवर्तन। विद्यार्थीयों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधीक महत्व रखता है। साल मे दो-एक परीक्षा के महत्व को कक्ष तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक सीस्या में हों। सबका भुल्याजीन अंलिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षको सें अनुरोध है कि वे. पाठ्यपुस्तक को पहले देख ले, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिख़ा-शैली बनाएं । शिक्षक तथा विद्यार्थीयों की सक्रिपता से भाषा - शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारें राष्टभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यहसारे देश के जन - जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किय जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

विषय सूची

क्र.नं.	विषय	लेखक/कवि	पृष्ठ
१.	भारति जय-विजय करे (कविता)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	०१
२.	ग्राम-लक्ष्मी की उपासना (निबंध)	विनोबा भावे	०५
३.	न्यायमंत्री (कहानी)	सुदर्शन	१७
४.	मानव भूमि भारत (कविता)	राधाकांत मिश्र	३३
५.	बलि का बकरा (कहानी)	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय	३८
६.	कुत्ते की सीख (कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	४७
७.	चिड़िया की बच्ची (कहानी)	जैनेंद्र कुमार	५०
८.	दोहा सप्तक (कविता)	कबीर, बिहारी, रहीम	६०
९.	रक्त और हमारा शरीर (लेख)	यतीश अग्रवाल	६४
१०.	दुनिया का एक अजूबा : कोणार्क (लेख)	स्नेहलता दास	७५
११.	खेत की ओर (कविता)	रामेश्वरलाल खंडेलवाल	८२
१२.	प्रदूषण (लेख)	हरचरण लाल शर्मा	८७
१३.	ग्राम श्री (कविता)	सुमित्रानंदन पंत	९६
१४.	धूल भी सिर चढ़ती है (जीवनी)	संकलित (केवल पढ़ने के लिए)	१००
१५.	सोना हिरनी (रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा (केवल पढ़ने लिए)	१०३
१६.	त्योहार का आनंद (पत्र लेखन)		११०
१७.	व्याकरण के पृष्ठ	(ज्ञान वर्धन के लिए)	११२